**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 64-66**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

# प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' और स्वाधीनता आंदोलन

**विनोद कुमार, 2. प्रो0 निशात बानो**

शोध अध्येत्री, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, 2. शोध– निर्देशक, प्रभारी हिन्दी विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0) भारत

**Received-13.09.2025, Revised-19.09.2025, Accepted-24.09.2025** **E-mail : vktndrp@gmail.com**

***सारांशः** जयशंकर प्रसाद एक नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य का एक युग हैं। "वस्तुतः हिंदी उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में जो स्थान प्रेमचंद का है, नाटक के क्षेत्र में लगभग वही स्थान प्रसाद का है।"[1] उनके नाटकों का रचनाकाल और भारत की स्वाधीनता के आंदोलनों (विशेषतः गांधी युग के आंदोलन) का समय एक ही है। अतः दोनों का परस्पर प्रभावित होना उसी प्रकार स्वाभाविक है, जिस प्रकार साहित्य और समाज का। प्रस्तुत शोध पत्र में जयशंकर प्रसाद की नाट्य दृष्टि, उनके नाटक 'चंद्रगुप्त' और स्वाधीनता आंदोलन के मध्य के परस्पर प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण है।*

***कुंजीभूत शब्द– स्वाधीनता आंदोलन, गांधी युग, बीजारोपण, औपनिवेशिक, पत्रकारिता, चेतना, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संघर्ष।***

औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के उद्देश्य से भारत का स्वाधीनता आंदोलन 1857 से प्रारंभ होकर 1947 तक चलने वाला एक दीर्घकालीन ऐतिहासिक और राजनीतिक संघर्ष ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जागरण भी था। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक व्यापक जन आंदोलन हेतु राष्ट्रीय चेतना एवं जागृति की भावना के उदय के विभिन्न कारणों में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों, परिवहन तथा संचार साधनों के विकास एवं आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ राष्ट्रीय साहित्य का उदय भी एक प्रमुख कारण था। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में किसान, मजदूर एवं सन्यासियों सहित समाज का प्रत्येक वर्ग अपना योगदान दे रहा था तो ऐसे में साहित्यकार भला पीछे कैसे रह सकता था। किसी भी आंदोलन हेतु विचार एक बीज का कार्य करता है। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया एवं उससे पूर्ण मुक्ति के विचार का बीजारोपण वास्तव में साहित्य द्वारा ही हुआ था। 'कलम की धार तलवार से भी अधिक पैनी होती है', स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में यह सिद्ध भी हुआ था क्योंकि सबसे पहली सजा लेखनी के कारण ही दी गई थी। "तिलक ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्हें 1882 ई. में पत्रकारिता के कारण सजा हुई।"[2] पत्रकारिता के साथ–साथ कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी सभी प्रमुख विधाओं में प्रेरक रचनाओं के द्वारा समाज का प्रत्येक वर्ग जागरूक और आंदोलित हुआ। एस. के. पांडे के अनुसार, "राष्ट्रीय साहित्य भी राष्ट्रीयता की उत्पत्ति के लिए एक प्रमुख कारण है।"[3] जनमानस को निज स्वार्थों से ऊपर उठाकर त्याग व बलिदान की प्रेरणा देने में हिंदी साहित्य की अग्रणी भूमिका थी। राष्ट्रीय चेतना हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का मुख्य विषय थी।

वैसे तो प्रसाद द्वारा रचित सभी नाटकों में राष्ट्रीयता और अतीत गौरव का विषय कुछ न कुछ स्थान अवश्य पाता है किन्तु उनके 'चंद्रगुप्त' नाटक की रचना का व्यापक उद्देश्य इतिहास के कथा सूत्रों को जोड़ने से अधिक राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति और आत्म गौरव का प्रसार दृष्टिगत होता है। 'चंद्रगुप्त' नाटक में सर्वत्र ऐतिहासिक कथा के मध्य स्वतंत्रता आंदोलन की अनुगूंज स्पष्ट सुनाई देती है। 'चंद्रगुप्त' के पात्रों हेतु अपने राज्य की रक्षा की तुलना में संपूर्ण आर्यावर्त की रक्षा का विषय अधिक महत्वपूर्ण है। स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में 'चंद्रगुप्त' के अध्ययन से दोनों का परस्पर प्रभावित होना दृष्टिगत होता है। स्वाधीनता आंदोलन के संपूर्ण काल को तीन चरणों में बांटा जा सकता है। प्रथम चरण 1885 ई. से 1905 ई. के मध्य का है जिसमें कांग्रेस की स्थापना हुई। यह पश्चिम की उदारवादी विचारधारा से प्रभावित कांग्रेसियों का समय था जो अंग्रेजी शासन से प्रतिवेदन व शिकायतों द्वारा मांग रखने तक सीमित थे। दूसरे चरण में 1905 से 1919 ई. के मध्य क्रांतिकारी भावना का उदय हुआ। 1919 से 1947 ई. के मध्य का तीसरा चरण गांधी युग था जिसमें विभिन्न अहिंसक आंदोलनों द्वारा पूर्ण स्वराज की सशक्त मांग रखी गई थी। गांधी और प्रसाद समकालीन थे, गांधी ने अपना पहला चंपारण सत्याग्रह 1917 में किया था और उनका भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में प्रारंभ हुआ। यह वही समय था, जब प्रसाद ने अपने नाटकों की रचना की है। चंद्रगुप्त की रचना भी 1931 ई. में हुई थी। अतः गांधी के आंदोलन और प्रसाद के 'चंद्रगुप्त', दोनों का परस्पर प्रभावित होना उतना ही स्वाभाविक है जितना साहित्य और समाज का। प्रसाद गांधी के आंदोलनों हेतु अपनी रचनाओं से जनमानस को प्रेरित करते हैं तो वहीं गांधी के मानवतावादी विचारों से उनके नाटक भी प्रभावित होते हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन हेतु जन जागृति के उद्देश्य से प्रसाद अपने ऐतिहासिक नाटक 'चंद्रगुप्त' में योजनाबद्ध और सुनियोजित तरीके से कथा सूत्रों, पात्रों, संवादों और घटनाओं की रचना करते हैं। वह यदि अपने इस नाटक में गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हैं तो वह भारतवासियों को गर्वानुभूति कराने के उद्देश्य से नहीं बल्कि आत्मविश्वास निर्माण के इस उद्देश्य से कि भारतीयों को यह ज्ञात हो कि वे सदैव से परतंत्र नहीं थे। वह भी कभी इतने शक्तिशाली थे कि विश्वविजयी अभियान पर निकले आक्रांताओं को धूल चटा सकते थे। 'उन्होंने (प्रसाद ने) प्राचीन इतिहास के पृष्ठ खोलकर यह दिखाना चाहा कि किसी समय हम भी कुछ थे। भारत की राष्ट्रीय एकता के दुर्ग पर टकराकर विश्वविजेताओं की सेनाएं छिन्न–भिन्न होकर लौट गई थी। इसी देश में वेदव्यास, गौतम, जरतकारू आदि से महात्मा, कालिदास से अमर कवि, चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त सदृश यशस्वी वीर पैदा हुए थे।"[4]

कोई भी समाज जो हीनता बोध से ग्रसित हो, वह ना ही कभी कोई उन्नति कर सकता है और ना ही क्रांति। एक परतंत्र देश की जनता में हीनता बोध का आना स्वाभाविक भी था, इसीलिए नाटककार को परतंत्र वर्तमान की क्षतिपूर्ति महान अतीत से करनी पड़ी। "परतंत्र देश का लेखक यदि वर्तमान की क्षतिपूर्ति अपने गौरवमयी अतीत में करता है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।"[5] प्रसाद अतीत के गौरव गान द्वारा भारतीयों को हीनता बोध से निकालकर उनके बल, शौर्य, साहस और सफलता का स्मरण करा रहे थे और ऐसा करके वह उनमें आत्मविश्वास जगा रहे थे। वह अतीत में विचरण नहीं कर रहे थे बल्कि भारत के भविष्य का नींवनिर्माण कर रहे थे। "यह समझना भूल होगी कि उन्होंने केवल भारतीय संस्कृति के गौरव गान के लिए नाटकों की रचना की थी।"[6]

प्रसाद को भलीभांति यह ज्ञान था कि भारतीयों को केवल हीनता बोध से निकालने मात्र से ही उद्देश्य पूरा नहीं होगा इसीलिए उनका अगला कार्य था – भारत की विविधता में बंटे समाज में एकता का जागरण। भारतीयों को क्षेत्रीय अस्मिता के भाव से ऊपर उठाकर संपूर्ण आर्यावर्त की अस्मिता से जोड़ना, क्योंकि यदि भारतीय अपने क्षेत्र, भाषा, जाति और धर्म के आधार पर विभाजित रहे तो उनमें राष्ट्रीय एकता का भाव सशक्त नहीं होगा। 'चंद्रगुप्त' नाटक में तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षक चाणक्य उसी प्रकार सिंहरण

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

और चंद्रगुप्त को भारत को अपना राष्ट्र मानने की एकता की शिक्षा दे रहे हैं, जिस प्रकार तत्कालीन परिदृश्य में गांधी देशवासियों को दे रहे थे। प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में चाणक्य अपने उन दोनों शिष्यों से कहते हैं, "तुम मालव हो और यह मागध, यही तुम्हारे मान का अवसान है ना, परंतु आत्मसम्मान इतने से ही संतुष्ट नहीं होगा। मालव और मागध को भूलकर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगे तभी वह मिलेगा। क्या तुम नहीं देखते हो कि आगामी दिवसों में आर्यावर्त के सब स्वतंत्र राष्ट्र एक के अनंतर दूसरे विदेशी विजेता से पददलित होंगे।"[7] और चाणक्य की इस प्रेरणा के परिणामस्वरूप ही चंद्रगुप्त की प्रतिज्ञा सामने आती है, "गुरुदेव, विश्वास रखिए, यह सब कुछ नहीं होने पावेगा। यह चंद्रगुप्त आपके चरणों की शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता है कि यवन यहां कुछ ना कर सकेंगे।"[8] तत्कालीन भारत में अंग्रेजों द्वारा 'फूट डालो और राज करो' की नीति के द्वारा शासन किया जा रहा था। ऐसे में भारत की असंख्य विभिन्नताओं में एकता का भाव प्रबल करने के लिए ऐसी रचनाओं में ऐसे संवादों की नितांत आवश्यकता थी, और इस आवश्यकता को जयशंकर प्रसाद द्वारा पूरा किया गया। उनके 'चंद्रगुप्त' नाटक में पुरुष पात्रों के साथ–साथ स्त्री पात्र अलका, मालविका और कल्याणी भी राष्ट्र रक्षा के लिए रणभूमि में कोई भी बलिदान देने के लिए तैयार हैं, युवा छात्र तो तत्पर हैं ही। यह सब उसी प्रकार है, जिस प्रकार गांधी के आंदोलन में युवाओं, छात्रों और स्त्रियों सहित समाज का प्रत्येक वर्ग स्वतंत्रता की चाह में किसी भी बलिदान हेतु उमड़ पड़ा था। विवेच्य नाटक में ईसा पूर्व चौथी शताब्दी का इतिहास है और तत्कालीन भारत में इस प्रकार के अखंड राष्ट्रवाद के प्रसार का कोई संकेत नहीं मिलता है। उस समय राज्य ही राष्ट्र थे, दूसरे राज्य की रक्षा का भाव कदाचित ही रहा हो, फिर भी प्रसाद ने 'चंद्रगुप्त' में राष्ट्रीय एकता का जो बिगुल बजाया है उसके मूल में स्वाधीनता आंदोलन की भूमि रचना है। इसी उद्देश्य से चाणक्य को गांधी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यवन अंग्रेजी शासक हैं, भारतीय पात्र स्वतंत्रता सेनानी और उनके मध्य होने वाला संग्राम, राजाओं का संग्राम नहीं बल्कि भारत की स्वाधीनता का संग्राम है। "चंद्रगुप्त, सिंहरण और अलका में उन्हीं दिनों के देशसेवक भारतीय लोगों का चित्र प्रतिबिंबित हुआ है। अलका गांधार निवासियों को इस प्रकार अनुप्राणित करती फिर रही है जिस प्रकार उन दिनों देश सेविकाएं तिरंगा झंडा लिए गाती हुई गलियों और सड़कों पर घूमा करती थी।"[9] इसी नाटक में अलका गाती है,

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पथ है– बढ़े चलो, बढ़े चलो!
असंख्य कीर्ति रश्मियां, विकीर्ण दिव्य दाह– सी,
सपूत मातृभूमि के–रुको ना शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में– सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो– बढ़े चलो, बढ़े चलो!"[10]

अलका के उपर्युक्त गीत 'स्वतंत्रता पुकारती' और 'बढ़े चलो' का नारा खुलेआम यह सिद्ध करता है कि चंद्रगुप्त की रचना मौर्य वंश के इतिहास के सूत्रों को जोड़ने से कहीं अधिक भारतीयों में आत्मविश्वास, उत्साह और राष्ट्रवाद के जागरण द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन की जमीन तैयार करने के उद्देश्य से की गई थी। बच्चन सिंह भी मानते हैं, "पूरे नाटक पर महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले राष्ट्रीय आंदोलन की गहरी छाप है। प्रसाद ने इतिहास के पृष्ठों में छिपे हुए उन सभी बिंदुओं को खोज निकाला है जो राष्ट्रीयता, जातीयता, देश की अखंडता को बल देते हैं।"[11]

चंद्रगुप्त नाटक के प्रत्येक दृश्य में एकता का संदेश गूंज रहा है। क्षेत्रीय टकराहट को त्याग कर आर्यावर्त की एकता का भाव नाटक के प्रत्येक पात्र में विद्यमान है। गांधार राजकुमारी अलका अपने भाई आंभीक के साथ नहीं है, क्योंकि पंजाब राज्य से अपनी शत्रुता के कारण आंभीक यवनों को पंजाब पर आक्रमण में सहायता कर रहा है। अलका इस बात की पक्षधर है कि भले ही पंजाब और गांधार की आपसी शत्रुता है, किंतु विदेशी आक्रमण के समय गांधार को पंजाब की सहायता करनी चाहिए क्योंकि पंजाब और गांधार दोनों एक ही देश भारत (आर्यावर्त)के हिस्से हैं। वह कहती है कि गांधार को पंजाब से अपनी अस्मिता और सम्मान की रक्षा हेतु लड़ना चाहिए किंतु विदेशी आक्रमण होने पर आक्रांताओं की सहायता के बजाय पंजाब की सहायता करनी चाहिए। गांधार नरेश के समक्ष जब आंभीक पंजाब नरेश पर्वतेश्वर द्वारा किए गए अपमान का स्मरण करता है और गांधार नरेश भी अलका को बताते हैं कि पर्वतेश्वर ने आंभीक को कायर कहा है और संधियों के विरुद्ध वितस्ता नदी के इस पार अपनी एक चौकी भी बना ली है, तो अलका कहती है, "तब महाराज! उस प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए जो लड़कर मर नहीं गया, वह कायर नहीं तो और क्या है?"[12] मालव राजकुमार सिंहरण का तक्षशिला विश्वविद्यालय में आंभीक से विवाद हो जाता है तो अलका सिंहरण के प्राणों के लिए चिंतित है क्योंकि सिंहरण एक वीर है और संपूर्ण आर्यावर्त को अपना देश मानकर उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणोत्सर्ग को तत्पर है। वह सिंहरण से गांधार छोड़ने का आग्रह करती है तब दोनों के मध्य का संवाद दोनों के देश प्रेम और उसकी स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है :

"अलका : मालव, तुम्हारे देश के लिए तुम्हारा जीवन अमूल्य है और वही यहां आपत्ति में है।

सिंहरण : राजकुमारी, इस अनुकंपा के लिए कृतज्ञ हुआ परंतु मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है। यही क्या, समग्र आर्यावर्त है, इसीलिए मैं :

अलका : (आश्चर्य से) क्या कहते हो?

सिंहरण : गांधार आर्यावर्त से भिन्न नहीं है, इसलिए उसके पतन को मैं अपना अपमान समझता हूं।

अलका : (श्वास लेकर) इसका मै अनुभव कर रही हूं, परंतु जिस देश में ऐसे वीर युवक हों, उसका पतन असंभव है। मालव तुम्हारे मनोबल में स्वतंत्रता है और तुम्हारी दृढ़ भुजाओं में आर्यावर्त के रक्षण की शक्ति है, तुम्हें सुरक्षित रहना चाहिए। मैं भी आर्यावर्त की बालिका हूँ :....."[13]

विवेच्य नाटक में नंद द्वारा चाणक्य के अपमान का कारण कोई निजी शत्रुता नहीं है बल्कि प्रसाद द्वारा रचना की गई है कि आर्यावर्त की रक्षा हेतु यवन सेना के विरुद्ध लड़ने के लिए चाणक्य नंद को प्रेरित कर रहे थे। चाणक्य नंद से कहते हैं, "यवनों की विकटवाहिनी निषध पर्वतमाला तक पहुंच गई है, तक्षशिला की भी उसमें अभिसंधि है। संभवत समस्त आर्यावर्त पादाक्रांत होगा। उत्तरापथ में बहुत छोटे–छोटे गणतंत्र हैं, वे उस सम्मिलित पारसीक यवन बल को रोकने में असमर्थ होंगे। अकेले पर्वतेश्वर ने साहस किया है इसीलिए मगध को पर्वतेश्वर की सहायता करनी चाहिए।"[14]

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

चंद्रगुप्त नाटक में स्त्रियों की भागीदारी के विभिन्न उदाहरणों से प्रसाद की यह प्रतिबद्धता सिद्ध होती है कि वह तत्कालीन समाज के प्रत्येक वर्ग को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन हेतु प्रेरित करना चाह रहे थे। कल्याणी का अपने पिता नंद से बोला गया एक संवाद है जिसमें वह कहती है,''....सेनापति को आज्ञा दीजिए कि आसन्न गांधार युद्ध में मगध की सेना अवश्य जाए और मैं स्वयं उसका संचालन करूंगी।''[15] अलका के माध्यम से तो 'चंद्रगुप्त' नाटक पूर्ण रूप से स्वतंत्रता आंदोलन का उद्घोष ही दृष्टिगत होता है। वह इस नाटक में गांधार राजकुमारी से अधिक एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू जैसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में दिखाई देती है। आर्यावर्त के नागरिक उससे प्रेरित होकर उसके नेतृत्व में आगे बढ़ रहे हैं।

'चंद्रगुप्त' नाटक ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के भारत के इतिहास का वर्णन और बिखरे ऐतिहासिक कथा सूत्रों का संयोजन मात्र नहीं है बल्कि प्रसाद के समकालीन परतंत्र भारत के नागरिकों को स्वतंत्रता संग्राम हेतु उठ खड़े होने की प्रेरणा है। 'चंद्रगुप्त' नाटक की रचना का उद्देश्य भारत के नागरिकों में व्याप्त हीनता बोध को दूर करके उनको उस स्वर्णिम गौरवशाली अतीत का ज्ञान कराना था जिसमें वह विश्व विजेताओं से लोहा लेकर उनको पराजित करने की शक्ति रखते थे। प्रसाद का यह कार्य किसी स्वतंत्रता सेनानी से कम नहीं था। वह सीधे आंदोलन में कूद कर जेल जा सकते थे किंतु उनके जेल जाने से अधिक महत्वपूर्ण ऐसी प्रेरक रचनाओं को समाज के सामने लाना था। वह प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम में कूद करके देश को केवल एक स्वतंत्रता सेनानी दे सकते थे किंतु चंद्रगुप्त जैसी रचनाओं के द्वारा उन्होंने असंख्य वीरों को देश के लिए तैयार किया। अतीत का ज्ञान भारतीयों को गर्व से भरने के लिए नहीं बल्कि आत्मविश्वास से भरने के लिए था। ऐसा आत्मविश्वास कि वे भी सशक्त अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता प्राप्ति के विशाल संघर्ष को सफलतापूर्वक लड़ सकते हैं। डॉ. भानुदेव शुक्ल लिखते हैं, ''चंद्रगुप्त की रचना में प्रसाद का उद्देश्य क्या था? प्रथम उद्देश्य है– युगीन राष्ट्रीय परिस्थितियों के संदर्भ में एक राष्ट्रीय आदर्श की अभिव्यक्ति। ऐतिहासिक कथानक इस उद्देश्य में साधन मात्र है। यदि ऐतिहासिक कथा को बांधना उद्देश्य होता तो इस कथानक में दो नाटक रचे जाते। सिकंदर की वापसी पर प्रथम नाटक पूरा हो जाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उनको ऐसे संघर्षशील राष्ट्र का चित्रण करना था जो प्रारंभ में प्रदेशों में बिखरा हुआ, विलास में सोया हुआ और वैयक्तिक स्वार्थों से जर्जर है। निष्ठावान सर्वस्व त्यागी राष्ट्रभक्त राष्ट्र के संपूर्ण चरित्र को बदलने में संलग्न है। सिकंदर की सेना से राष्ट्र हिल गया था। वही यवन सेना दोबारा सेल्यूकस के नेतृत्व में आक्रमण करती है। आक्रमणकारी शक्ति वही है, अंतर यह है कि अब भारत जागृत और संगठित है। परिणामस्वरुप यवन सेना पराजित होती है।''[16] विवेच्य नाटक ने न केवल तत्कालीन आंदोलन हेतु भारतीयों को प्रेरित करने का कार्य किया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन से भी यह नाटक बहुत हद तक प्रभावित हुआ। नाटक और स्वतंत्रता आंदोलन दोनों एक दूसरे से प्रभावित है। गांधी के शांति, अहिंसा और मानवता का संदेश भी पूरे नाटक में गूंजता है। सेल्यूकस की पराजय के पश्चात कार्नेलिया से चंद्रगुप्त का विवाह इस तथ्य को सबल करने के लिए है कि भारत की विजय में किसी की आंखों में आंसू नहीं है। विजेता और पराजित दोनों ही समान रूप से सुखी और सफल हैं। डॉ भानु देव शुक्ल आगे लिखते हैं, ''किंतु भारत की वास्तविक शक्ति शास्त्र की नहीं बल्कि उच्चतम मानवीय आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। सेल्यूकस की पराजय से अधिक मानवतावाद की विजय है जिसमें कोई राष्ट्र, कोई संस्कृति पराजित नहीं है। यह एक स्थाई विजय है। महात्मा गांधी भी तो यही आदर्श लेकर स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व कर रहे थे।''[17]

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संपादक– डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, संस्करण 2018, मयूर बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 549.
2. पांडे एस.के., आधुनिक भारत, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृष्ठ सं. 317.
3. वही– पृष्ठ सं. 294.
4. गुप्त, परमेश्वरी लाल, प्रसाद के नाटक, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी पृष्ठ सं. 17.
5. संपादक– डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, संस्करण 2018, मयूर बुक्स नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 550.
6. वही– पृष्ठ सं. 550.
7. प्रसाद जयशंकर, चंद्रगुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2015, पृष्ठ सं. 46.
8. वही– पृष्ठ सं. 46.
9. गुप्त, परमेश्वरी लाल, प्रसाद के नाटक, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी पृष्ठ सं.116.
10. प्रसाद जयशंकर, चंद्रगुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2015, पृष्ठ सं. 152.
11. सिंह, डॉ. बच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, संस्करण 2017, राधा कृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 370.
12. प्रसाद जयशंकर, चंद्रगुप्त, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 2015, पृष्ठ सं. 69.
13. वही– पृष्ठ सं. 47.
14. वही– पृष्ठ सं. 58.
15. वही– पृष्ठ सं. 58, 59.
16. शुक्ल, डॉ.भानुदेव, प्रसाद का नाट्य साहित्य, मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 67,
17. वही।

*****